

पशु स्वास्थ्य की दिशा में कार्य करना

सामान्य अध्ययन – पेपर 3: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/ सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

कीवर्ड : विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (डब्लूओएएच), एपिज़ूटिक रोग, एक स्वास्थ्य इकाई, राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन, पशु स्वास्थ्य नियामक पारिस्थितिकी तंत्र, पशु महामारी तैयारी मॉडल, पशु स्वास्थ्य नियामक पारिस्थितिकी तंत्र, पशु टीकों और बुनियादी ढांचे के लिए प्रोत्साहन ।

चर्चा में क्यों-

- कोविड -19 के बाद मानव स्वास्थ्य और पशु स्वास्थ्य पर अनुसंधान के बीच अधिक सहयोग और तालमेल के लिए महामारी की तैयारी के लिए प्रभावी उपकरण बनाने की आवश्यकता उत्पन्न हुई है।

भारत में पशुधन क्षेत्र के बारे में मुख्य विशेषताएं:

- भारत में पशुधन की आबादी **1.6 बिलियन** है , जिसमें लगभग **280 मिलियन किसान** आजीविका के लिए पशुधन और संबंधित उद्योगों पर निर्भर हैं।
- व्यापार के दृष्टिकोण से, देश में डेयरी उद्योग का मूल्य **160 बिलियन डॉलर** है, जबकि मांस उद्योग का मूल्य **50 बिलियन डॉलर** है ।
- इसके अलावा, पशुधन और संबंधित गतिविधियों का वन्यजीवों और मनुष्यों के साथ अन्योन्याश्रित संबंध है।
- जलवायु परिवर्तन और अप्रत्याशित मौसम के मौजूदा माहौल में, पशुपालन किसानों के लिए विश्वसनीय आय के स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण है।

क्या आप जानते हैं?

पशु स्वास्थ्य के लिए विश्व संगठन

- विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (**डब्लूओएएच**), पूर्व में ऑफिस इंटरनेशनल डेस एपिज़ूटीज़ (ओआईई), एक अंतर-सरकारी संगठन है जो पशु रोग नियंत्रण का समन्वय, समर्थन और प्रचार करता है।
- **डब्लूओएएच** का मुख्य उद्देश्य **एपिज़ूटिक रोगों को नियंत्रित करना** और इस प्रकार उनके प्रसार को रोकना है।
- अन्य उद्देश्यों में पारदर्शिता, वैज्ञानिक जानकारी, अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता, स्वच्छता सुरक्षा, पशु चिकित्सा सेवाओं को बढ़ावा देना, खाद्य सुरक्षा और पशु कल्याण शामिल हैं।
- इसे **विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ)** द्वारा एक संदर्भ संगठन के रूप में मान्यता प्राप्त है और 2018 तक, इस में कुल 182 सदस्य देश थे।
- **डब्लूओएएच** संयुक्त राष्ट्र प्रणाली पर निर्भर नहीं है, इसकी स्वायत्तता संस्थागत और वित्तीय दोनों है, और इसकी गतिविधियाँ अपने स्वयं के संवैधानिक दस्तावेज द्वारा नियंत्रित होती हैं।

ज़ूनोटिक रोगों की वैश्विक प्रवृत्ति क्या है ?

- विश्व स्तर पर, 2000 से 2010 तक बीमारी के प्रकोप के लगभग 9,580 उदाहरण देखे गए हैं, जिनमें से 60% रोग प्रकृति में जूनोटिक थे।
- दुनिया भर में बीमारी के प्रकोप की घटनाएं भी 6% की वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ रही हैं।
- जूनोटिक रोगों का वार्षिक प्रकोप अर्थव्यवस्था को \$12 बिलियन के अनुमानित वार्षिक नुकसान में बदल देता है।
- भले ही ये रोग सीधे मानव स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करते हैं, वे किसानों, निर्यात और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भारी परिणामों के लिए जिम्मेदार हैं।
- महामारी की तैयारियों के संदर्भ में एक बड़ी खामी को इस तथ्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है कि यह काफी हद तक मानव केंद्रित रहा है, जिससे जानवरों में महामारी की संभावना वाले रोगों के लिए एक बड़ा अनसुलझा अंतर रह गया है।

पशु स्वास्थ्य के लिए सरकार द्वारा विभिन्न पहल:

1. **बढ़ा हुआ निवेश:** पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी), भारत सरकार स्वास्थ्य की रक्षा और आर्थिक लचीलापन बनाने के लिए तैयारियों में निवेश बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है ताकि भारत पशु महामारी की तैयारी में विश्व में अग्रणी बन सके।
2. **वन हेल्थ यूनिट:** डीएएचडी ने गेट्स फाउंडेशन के सहयोग से एक समर्पित 'वन हेल्थ यूनिट' की स्थापना की है।
3. **पशु महामारी तैयारी मॉडल:** यूनिट के प्राथमिक फोकस क्षेत्रों में से एक "पशु महामारी की तैयारी" मॉडल रहा है, जो भंडारण और डेटा के निर्बाध आदान-प्रदान और पशुधन स्वास्थ्य पर जानकारी के लिए एक तंत्र बनाकर राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन के माध्यम से लागू किया जाएगा।
4. **पशु स्वास्थ्य नियामक पारिस्थितिकी तंत्र:** डीएएचडी ने देश में पशु स्वास्थ्य नियामक पारिस्थितिकी तंत्र को सुव्यवस्थित करने के लिए पशु स्वास्थ्य के लिए एक अधिकार प्राप्त समिति की स्थापना की है।
5. **पशु रोग निदान प्रयोगशालाओं को जोड़ना:** एनडीएलएम के ढांचे के भीतर, सीरो -निगरानी में शामिल सभी पशु रोग निदान प्रयोगशालाओं को एक पोर्टल के माध्यम से जोड़कर, और प्रयोगशालाओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले एसओपी के सामंजस्य द्वारा पर्याप्त प्रगति की गई है।
6. **पशु टीकों और बुनियादी ढांचे के लिए प्रोत्साहन:** कंपनियां अब भारत में पशु स्वास्थ्य उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए पशुपालन अवसंरचना कोष के तहत पशु टीकों और संबंधित बुनियादी ढांचे की स्थापना या विस्तार के लिए प्रोत्साहन का लाभ उठा सकती हैं।

एक स्वास्थ्य अवधारणा क्या है?

- 'वन वर्ल्ड-वन हेल्थ' एक ऐसा दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि लोगों का स्वास्थ्य जानवरों के स्वास्थ्य और हमारे साझा पर्यावरण से निकटता से जुड़ा हुआ है।
- हाल के वर्षों में स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण विषय बनकर उभरा है क्योंकि कई कारकों ने लोगों, जानवरों, पौधों और हमारे पर्यावरण के बीच संवाद को बदल दिया है।
- वाइल्डलाइफ़ कंज़र्वेशन सोसाइटी (डब्ल्यूसीएस) ने 2007 में 12 सिफारिशों (**मैनहट्टन प्रिंसिपल्स**) के साथ "वन वर्ल्ड-वन हेल्थ" शब्द पेश किया, जो महामारी की बीमारी को रोकने और पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता को बनाए रखने के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण स्थापित करने पर केंद्रित था।

भारत में एक स्वास्थ्य अवधारणा:

- मानव और वन्यजीव स्वास्थ्य के बीच सेतु पालतू जानवर हैं, जो मानव और वन्यजीवों के बीच बहुत सी बीमारियों के वाहक हैं, या जो पशुधन क्षेत्र से शुरू होते हैं और मानव स्वास्थ्य में स्थानांतरित हो जाते हैं। इस प्रकार, डीएचडी ने इस अवधारणा को संचालित करने का निर्णय लिया है। जहां तीनों प्लेटफॉर्म क्षमता निर्माण के साथ एक-दूसरे से बात करना और रिपोर्ट करना शुरू करते हैं।
- अवधारणा के तहत पहल में शामिल हैं:
 - रोग प्रकोप, व्यापकता और प्रबंधन पर डेटा संग्रह के लिए तंत्र को संस्थागत बनाना।
 - जूनोटिक रोगों के आसपास संचार और प्रयोगशाला परीक्षण क्षमताओं को मजबूत करने पर ध्यान देने के साथ **प्रयोगशालाओं के नेटवर्क को एकीकृत करने** पर भी जोर देता है।
 - **एक स्वास्थ्य कार्यक्रम** के विकास के लिए आवश्यक विश्लेषण को सक्षम करने के लिए, पशुधन और पशु स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर जोर देते हुए और **राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन** के डिजिटल आर्किटेक्चर के साथ डेटा के एकीकरण के साथ सभी क्षेत्रों में संचार रणनीति विकसित करना है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन:

- **कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय** की एक पहल है, जिसे 2014-15 में पशुधन क्षेत्र के सतत विकास के उद्देश्य से शुरू किया गया था।
- इस क्षेत्र में किसानों को शामिल करके **ग्रामीण उद्यमिता** बढ़ाने में सहायता करता है।
- यह योजना बेरोजगार युवाओं और पशुपालकों को मवेशी, डेयरी, मुर्गी पालन, भेड़, बकरी, सुअर पालन, चारा और चारा क्षेत्रों में आजीविका के अवसर भी प्रदान करेगी।

आगे की राह :

- पशु टीकों के विकास में अब तक मानव टीकों में प्रगति का लाभ नहीं उठाया गया है।
- एक मजबूत महामारी तैयारी मॉडल बनाने के लिए, पशु स्वास्थ्य पर डेटा को मानव स्वास्थ्य पर उपलब्ध डेटा के साथ मर्ज करना अनिवार्य है।
- पशु दवाओं और टीकों के समय पर और सफल विकास को सुनिश्चित करने के लिए एक सफल पशु महामारी तैयारी मॉडल टेम्पलेट महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र भागीदारों के साथ सहज समन्वय की आवश्यकता होगी।

- वैक्सीन अनुसंधान में रोगजनकों को प्राथमिकता देने वाली और फार्मा कंपनियों की सहायता करने वाली संस्थाएँ, भारतीय फार्मा कंपनियाँ, और विश्व संगठन जैसे विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन, वैक्सीन और टीकाकरण के लिए ग्लोबल अलायंस, बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, आदि शामिल होंगे।
- यह बीमारियों के बारे में वास्तविक समय की जानकारी को जोड़ने और तुलना करने में सक्षम होगी जो बीमारी के प्रकोप की भविष्यवाणी के लिए एक विश्वसनीय तंत्र तैयार करेगी।
- यह भारत-केंद्रित पहल वैश्विक महामारी की तैयारी के प्रयास का नेतृत्व करने के लिए एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु भी पेश करेगी क्योंकि इस खतरे का सामना अन्य देशों के साथ-साथ विकसित अर्थव्यवस्थाओं को भी करना पड़ रहा है।
- तैयारी के तहत गतिशील मॉडल से रोग निगरानी में और वृद्धि होगी ताकि देश अगले प्रकोप हिट से पहले बेहतर तरीके से तैयार हो सकें।

स्रोत: द हिंदू

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (ओआईई) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :

1. ओआईई का मुख्य उद्देश्य एपिज़ूटिक रोगों को नियंत्रित करना और इस प्रकार उनके प्रसार को रोकना है।
2. इसे विश्व व्यापार संगठन द्वारा एक संदर्भ संगठन के रूप में मान्यता प्राप्त है।
3. ओआईई संयुक्त राष्ट्र प्रणाली पर निर्भर नहीं है, इसकी स्वायत्तता संस्थागत और वित्तीय दोनों है, और इसकी गतिविधियाँ अपने स्वयं के संवैधानिक दस्तावेजों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही नहीं है/हैं ?

- a) केवल 1
- b) केवल 2
- c) केवल 3
- d) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर: d

- डब्लूओएएच का मुख्य उद्देश्य एपिज़ूटिक रोगों को नियंत्रित करना और इस प्रकार उनके प्रसार को रोकना है।
- इसे विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) द्वारा एक संदर्भ संगठन के रूप में मान्यता प्राप्त है और 2018 में कुल 182 सदस्य राज्य थे।
- डब्लूओएएच संयुक्त राष्ट्र प्रणाली पर निर्भर नहीं है, इसकी स्वायत्तता संस्थागत और वित्तीय दोनों है, और इसकी गतिविधियाँ अपने स्वयं के संवैधानिक दस्तावेजों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्र . महामारी की तैयारी के लिए प्रभावी उपकरण बनाने के लिए मानव स्वास्थ्य और पशु स्वास्थ्य पर अनुसंधान के बीच अधिक सहयोग और तालमेल की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये।